सर्वनाम शब्द और उनका प्रयोग

सर्वनाम का प्रयोग सामान्यतया नाम के स्थान पर किया जाता है जब कि नाम को एक से अधिक बार प्रयोग करने की आवश्यकता होती है। एक ही शब्द की आवृत्ति सुन्दर प्रतीत नहीं होती। इस प्रकार नाम के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनाम शब्द के ही लिङ्ग, विभक्ति और वचन ग्रहण करते हैं (यो यत्स्थानापन्नः स तद्धर्मोल्लभते)।

इदमादि सर्वनाम शब्दों में इदम् (यह) अदस् (वह) युष्मद् (तू, तुम) अस्मद् (मैं, हम) और भवान् (आप) इन सभी के रूप निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होते हैं—

१—समीप की वस्तु या व्यक्ति के लिए इदम् शब्द, अधिक समीप की वस्तु या व्यक्ति के लिए एतद् शब्द, सामने के दूरवर्ती पदार्थ या व्यक्ति के लिए अदस् और परोक्ष (जो सामने नहीं है) पदार्थ वा व्यक्ति को बताने के लिए तत् शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसा कि इस श्लोक में बतलाया गया है—

"इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्।
अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात् ॥"

२—जिस व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में एकबार कुछ कह कर फिर उसके विषय में कुछ कहना हो तो (पुनरुक्तिबोध होने से) द्वितीया विभक्ति में, तृतीया विभक्ति के एकवचन में, और षष्ठी तथा सप्तमी विभक्तियों के द्विवचन में इदम् शब्द के स्थान में 'एन' आदेश होता है, यथा—अनेन व्याकरणमधीतम् एनं छन्दोऽध्यापय (इसने व्याकरण पढ़ लिया है, अब इसे छन्द पढ़ाइये)। अनयोः पवित्रं कुलम्, एनयोः प्रभूतं स्वम् (इनका पवित्र कुल है, इनके पास बहुत धन है)।

इदम् और एनत् के वैकल्पिक रूप—
पुं०—एनम्, एनौ, एनान्; एनेन, एनयोः एनयोः।
स्त्री०—एनाम्, एने, एनाः; एनया, एनयोः, एनयोः
नपुं०—एनत्, ऐने, एनानि; एनेन एनयोः, एनयोः।

३—युष्मद् और अस्मद् शब्दों की द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी के एकवचन में क्रमशः 'त्वा, ते, ते, मा, मे, मे,' द्विवचन में क्रमशः 'वाम्, नौ' और बहुवचन में क्रमशः 'वः, नः' आदेश होते हैं।* इनको प्रयोग में लाने के नियम ये हैं—

*श्रीशस्त्वावतु मापीह दत्तात् ते मेऽपि शर्म सः।
स्वामी ते मेऽपि स हरिः पातु वामपि नौ विभुः ॥
सुखं वां नौ ददात्वीशः पति र्वामपि नौ हरिः।
सोऽ व्याद्वो नः शिवं वो नो दद्यात्सेव्योऽ त्र वः स नः ॥

ये सब आदेश (त्वा, ते, मे आदि) वाक्य या श्लोक के चरण के आरम्भ में 'च वा हा, अह, एव' इन पाँच अव्ययों के योग में और सम्बोधन के परे नहीं होते, यथा—वाक्यारम्भ में–मम गृहं गच्छ (मेरे घर जाओ)। इसमें 'मम' के स्थान पर 'मे' नहीं हुआ। पाँच अव्ययों के योग में—स त्वां मां च जानाति (वह तुझे और मुझे जानता है)। इदं पुस्तकं तवैवास्ति (यह पुस्तक तेरी ही है)। हा मम मन्दभाग्यम् (हाय मेरा दुर्भाग्य)। इनमें क्रमशः त्वा, मा, ते, मे आदेश नहीं हुए। सम्बोधन के ठीक परे–बन्धो, मम ग्राममागच्छ (भाई मेरे गाँव चलो)। यहाँ 'मम' के स्थान पर 'मे' नहीं हुआ।

४—जब 'च' आदि अव्ययों का युष्मद्, अस्मद्, के 'त्वा, ते, मा मे' आदि संक्षिप्त रूपों से कोई सम्बन्ध नहीं होता तब ये आदेश हो सकते हैं, यथा—केशवः शिवश्च मे इष्टदेवौ (केशव और शिव मेरे इष्टदेव हैं)। यहाँ 'मे' का सम्बन्ध इष्टदेव से है और 'च' केशव और शिव को एक वाक्य के साथ मिलाता है।

५—जब सम्बोधन के साथ कोई विशेषण हो तब युष्मद् और अस्मद् को उक्त आदेश हो सकते हैं, यथा—हरे दयालो नः पाहि (हे दयालु हरि, हमारी रक्षा करो)।

६—सम्मान के अर्थ में युष्मद् के स्थान पर भवत्* शब्द का प्रयोग होता है, यथा—"रक्तमुखेन स प्रोक्तः—भो भवान् अभ्यागतः अतिथिः तद् भक्षयतु (भवान्) मया दत्तानि जम्बूफलानि" (रक्तमुख ने उससे कहा—सुनिए, आप अभ्यागत और अतिथि हैं, अतः आप मेरे दिये हुए जामुन के फल खाइये।)

७—सम्मान बोध के अभाव में भी युष्मद् के स्थान में भवत् शब्द का प्रयोग होता है, यथा—अहमपि भवन्तं किमपि पृच्छामि (मैं भी आपसे कुछ पूछता हूँ)।

८—सम्मान बोध होने से कभी-कभी 'भवत्' शब्द के पहले 'अत्र' और 'तत्र' का प्रयोग किया जाता है। सम्मान का पात्र यदि उपस्थित हो तो 'अत्रभवत्' और उपस्थित न हो तो 'तत्रभवत्' का प्रयोग किया जाता है; यथा—अत्रभवन्तः विदाङ्कुर्वन्तु, अस्ति तत्रभवान् भवभूतिः नाम काश्यपः (आप लोग यह जानें कि श्री पूज्य पाद काश्यप गोत्र में भवभूति हैं)। अत्रभवान् वसिष्ठ आज्ञापयति (पूज्यवाद वसिष्ठ जी आज्ञा देते हैं)। अपि कुशली तत्रभवान् कण्वः ? (पूजनीय कण्व जी कुशल से तो हैं ? अत्रभवान् प्रयागीयविश्वविद्यालयकुलपतिः अभिभाषते (ये इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के चांसलर अभिभाषण कर रहे हैं)।

९—भवत् शब्द के पूर्व 'एषः' और 'सः' का भी प्रयोग होता है, यथा—†एष भवान् अत्र वर्तते (आप यहीं हैं)। स भवान् मामेतदुक्तवान् (श्रीमान् ने मुझे ऐसा कहा है)।

---

*भवत् शब्द यद्यपि मध्यम पुरुष के स्थान में प्रयुक्त होता है, तथापि वह सदा प्रथम पुरुष ही रहता है।

†'एषः' और 'सः के' आगे अकार को छोड़कर कोई भी अक्षर रहे तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

इन सर्वनामों के अतिरिक्त त्वत्, त्व, त्यद् आदि और भी सर्वनाम हैं, जिनका बहुत कम प्रयोग किया जाता है।

१०—युष्मद्, अस्मत् और भवत् शब्दों को छोड़कर सब सर्वनाम विशेष्य और विशेषण दोनों हो सकते हैं, यथा—सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावा नेतरे गुणाः (सब के स्वभाव की ही परीक्षा होती है, अन्य गुणों की नहीं)। अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते (क्योंकि सब गुणों के ही ऊपर स्वभाव रहता है)। इन उदाहरणों में 'सर्वस्य' विशेष्य और 'सर्वान्' विशेषण हैं।

११—सर्वनाम शब्दों के आगे सम्बन्धार्थ में 'ईय' आदि प्रत्यय होते हैं, जैसे—मदीय, मामक, मामकीन (मेरे); आस्माकीन, अस्मदीय (हमारा); त्वदीय, तावक, तावकीन (तेरा); यौष्माक, यौष्माकीण, भवदीय (तुम्हारा); स्वीय, स्वकीय (अपना); परकीय (दूसरे का); तदीय (उसका)।

कुछ और सादृश्यवाचक विशेषण—मादृशः, मत्समः, (मुझ सा); अस्मादृशः, अस्मत्समः (हम सा); त्वादृशः, त्वत्समः, (तुझ सा); युष्मादृशः, युष्मत्समः (तुम सा); भवादृशः, भवत्समः (आप सा); ईदृशः (ऐसा); कीदृशः (कैसा) ?

१२—प्रश्नवाची सर्वनाम "कौन, क्या" के अनुवाद के लिए संस्कृत में "किम्" शब्द का प्रयोग होता है और इसके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं—

कः आगतः (कौन आया है ?), का आगता (कौन स्त्री आयी है ?) किमस्ति (क्या है ?)

"किम्" (क्या ?) का अनुवाद "अपि" "चित्" "चन" और "ननु" से भी किया जाता है, यथा—

किमिदमापतितम् ? (ओ ! यह क्या आ पड़ा ?)

अपि गतः प्राध्यापकः ? (क्या प्रोफेसर साहब चले गये ?)

किमप्यस्ति, किञ्चिदस्ति अथवा किञ्चनास्ति ? (कुछ है ?)

ननु जलयानं गतम् ? (क्या जहाज चला गया ?)

किम् शब्द के रूपों के साथ 'अपि' 'चित्' 'चन' जोड़ देने से हिन्दी के "किसी, कोई, कुछ" आदि अनिश्चयवाचक सर्वनाम का बोध होता है, यथा—

कश्चिदागतोऽस्ति कश्चन आगतोऽस्ति कोपि आगतोंऽस्ति	कोई आया है।
किञ्चिदस्ति किञ्चनास्ति किमप्यस्ति	कुछ है।
काचिदागताऽस्ति काचनागताऽस्ति काप्यागताऽस्ति	कोई आयी है।

१३—'यत्' शब्द के साथ 'तत्' शब्द का सम्बन्ध होता है (यत्तदोर्नित्य-सम्बन्धः), किन्तु जहाँ 'यत्' शब्द उत्तर के वाक्य में आता है वहाँ पूर्व के वाक्य में 'तत्' शब्द का रखना जरूरी नहीं, यथा—

सोऽयं तव पुत्रः आगतः यः देव्या स्वकरकमलैरुपलालितः (यह तुम्हारा वह पुत्र आ गया जिसका देवी जी ने अपने हस्तकमलों से लालन-पालन किया।) षोडशवर्षीया आसीत् सा ब्रह्मचारिणोढा (जो सोलह वर्षों की थी उसके साथ ब्रह्मचारी ने विवाह किया।)

यत् वदामि तत् शृणु (जो कहता हूँ वह सुनो)। किन्तु—

शृणोमि यत् वदसि (सुनता हूँ जो कहते हो)।

१४—संस्कृत भाषा में 'यह' या 'ऐसा' का अनुवाद 'यत्' शब्द से होता है, किन्तु कभी-कभी 'इति' शब्द से भी होता है, यथा—

ममेति निश्चयो यदहं पठिष्यामि (मेरा यह निश्चय है कि मैं पढ़ूँगा)।

जर्मन-शासकस्य हिटलरस्यैषा दशा भविष्यति इति को जानाति स्म (यह कौन जानता था कि जर्मनी के शासक हिटलर की यह दशा होगी।)

हिन्दी में अनुवाद करो—

१—ग्रामोपकण्ठे विमलापं सरोऽस्ति, **तस्मिन्सुखं** स्नान्ति ग्रामीणाः। २—रामो राज्ञां सत्तमोऽभूद्। स **पितुर्वचनं** पालयित्वा वनं प्राव्रजत्। ३—वृत्तेन वर्णनीया रमेशसुता कमला नाम। **तां** परोक्षमपि प्रशंसति लोकः। ४—**अमुं पुरः** पश्यसि देवदारुं **पुत्रीकृतोऽसौ** वृषभध्वजेन। ५—**स** सम्बन्धी श्लाघ्यः प्रियसुहृदसौ तच्च हृदयम्। ६—सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः संभावनागुणमवेहि **तमीश्वराणाम्**। ७—यदेते गृहागतेषु शत्रुष्वप्यातिथेया **भवन्ति स एषां कुलधर्मः**। ८—**तस्य** च **मम** च पौरधूर्तैर्वैरमुदपाद्यत। ९—आयुष्मन्नेष वाग्विषयीभूतः **स** वीरः। १०—साहसकारिण्यस्ताः कुमार्यो **याः** स्वयं संदिशन्ति समुपसर्पन्ति वा। ११—**एषो**ऽस्मि कार्यवशादायोधिक्यस्तदानींतनश्च संवृत्तः। १२—एव**मत्र भवन्तो** विदाङ्कुर्वन्तु। अस्ति **तत्र भवान्** काश्यपः श्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिर्नाम जातूकर्णीपुत्रः

संस्कृत में अनुवाद करो

१—पिता ने कहा—वह मेरा योग्य शिष्य है, प्रिय पुत्र है। २—भारतवासी जो घर आये हुए शत्रु का भी आतिथ्य करते हैं, यह उनका कुलधर्म है। ३—इन प्राणों के लिए मनुष्य क्या पाप नहीं करता? ४—कोई जन्म से देवता होते हैं और कोई कर्म से। दोनों का (उभयेषामपि द्वयानामपि वा) दुबारा जन्म नहीं होता। ५—जो जिसको प्यारा है, वह उसके लिए कोई अपूर्व वस्तु है (किमपि द्रव्यम्)। ६—मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप हमारे रिश्तेदार (सम्बन्धी) हैं। ७—आप दोनों की मित्रता कब से (कदा प्रभृति) है? ८—देवता तथा असुर दोनों ही

(उभये) प्रजापति की सन्तान हैं। इनका आपस में (मिथः) लड़ाई झगड़ा होता आया है। ९—कहिए क्या यह आप का कसूर नहीं है? १०—हे परमेश्वर, आप हमारी रक्षा करें। ११—क्या गाड़ी (वांष्पयानम्) चली गई? १२—वे तुम्हारे कौन होते हैं? १३—यह हाथी किसका है? १४—लीजिए, यह आपकी चिट्ठी है। १५—जो ठण्डक है वह पानी का स्वभाव है। (शैत्यं हि यत् सा····) १६—पूज्य गौतमजी ने मुझे यह कार्य करने की आज्ञा दी है। १७—बुद्धिमान् लोगों की सङ्गति में एक अपूर्व आनन्द होता है। १८—जो लोग तुम्हारे घर पर आवें उनसे कोमलतापूर्वक बोलो। १९—उस विपत्ति काल में उन लोगों ने बड़ी कठिनता से अपने को बचाया। २०—इस शुभ अवसर पर श्रीमान् जी क्या बोलने का सङ्कल्प करते हैं?